# प्रवासी कहानीकार तेजेन्द्र शर्मा तथा कृष्ण बिहारी की कहानियों का मूल्यपरक अध्ययन

* अनुराधा शर्मा, ** डॉ. मधु संधु

**जीवन परिचय**–**'तेजेन्द्र शर्मा'** का जन्म 21 अक्तूबर सन् 1952 को पंजाब के छोटे से शहर जगराँव में तथा **'कृष्ण बिहारी'** का जन्म 29 अगस्त सन् 1954 को उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले के गाँव कुण्डाभरथ में हुआ। **'तेजेन्द्र शर्मा'** को अपने घर से ही लेखन का परिवेश मिला। इनके पिता सरकारी मुलाज़िम होने के साथ–साथ लेखन भी करते थे। **'तेजेन्द्र शर्मा'** के अनुसार, **''मेंरे पिताजी श्री नंदगोपाल मोहला नागमणी उर्दू में लिखा करते थे। उन्होंने उपन्यास, अफ़साने, गज़ले, नज़्में, गीत सभी विधाओं में लिखा।''**[1] इन पर इनके प्रिय अध्यापक 'श्री श्याम मोहन जुत्शी' का भी प्रभाव है। इनकी स्वर्गीय पत्नी 'इन्दु शर्मा' ने भी इन्हें लेखन की और प्रेरित किया। **'तेजेन्द्र शर्मा'** ने समय–समय पर बैंक ऑफ इंडिया, 'एअर इंडिया' में कार्य किया। इस समय वे लंदन के ओवर ग्राउण्ड रेलवे में कार्यरत हैं। **'कृष्ण बिहारी'** ने कई अखबारों तथा साप्ताहिक हिन्दुस्तान, धर्मयुग, योजना आदि पत्रिकाओं में खूब लिखा अब **'कृष्ण बिहारी'** बरसों से अबूधाबी में एक इंडियन स्कूल में वरिष्ठ हिन्दी अध्यापक के पद पर कार्यरत हैं।

**रचना संसार**–**'तेजेन्द्र शर्मा'** के लेखन की शुरुआत अंग्रेजी भाषा से हुई। सन् 1977 में वायरन पर एवं सन् 1978 में जान कीट्स पर इनकी पुस्तकें प्रकाशित हुई। सन् 1980 में इनकी पहली कहानी **'प्रतिबिम्ब'** नवभारतटाइम्स में प्रकाशित हुई। **'तेजेन्द्र शर्मा'** के शब्दों में, **''अपनी तबीयत के अनुसार अपनी पहली कहानी लंदन में स्थाई रूप से बसने से पहले ही लिख डाली''**।[2]

**'तेजेन्द्र शर्मा'** के सन् 2007 तक पाँच कहानी संग्रह **काला सागर, ढिबरी टाईट, 'देह की कीमत', यह क्या हो गया तथा 'बेघर आंखे'** प्रकाशित हुए। **यहां से वहां तक** तथा **समुद्रपार रचना** इनकी सम्पादित पुस्तकें है। **'ढिबरी टाईट' पंजाबी** में, **'पासपोर्ट के रंग' नेपाली** में तथा **'ईटों का जंगल उर्दूं'** में इनके अनुदित कहानी संग्रह है। **'तेजेन्द्र शर्मा'** की 16 कहानियां तथा **'साज–ए–दिल'** इनके आडियो बुक्स हैं। इन्होंने दूरदर्शन के लिए **'शांति सीरियल'** का लेखन किया।

**'कृष्ण बिहारी'** जी ने लेखन 13–14 वर्ष की आयु से आरम्भ किया। इन्होंने सबसे पहले अपने भाई की मृत्यु पर दुखी होकर भोजपुरी में दो कविताएं लिखी फिर सन् 1971 में गणेश शंकर विद्यार्थी इंटरमीडियेट कॉलेज की पत्रिका में इनकी पहली कहानी **'मजबूरी और मित्रता'** शीर्षक से छपी। फिर कुछ समय के लिए इनके लेखन में विराम लग गया। सन् 1986 में अबूधाबी जाने के बाद वहां से सन् 1995 में **'दो औरतें'** कहानी हंस पत्रिका में प्रकाशित हुई, इसी से इनके लेखन की दूसरी पारी की शुरुआत कहा जा सकता है।

**'कृष्ण बिहारी'** ने 2005 तक चार कहानी संग्रह **'दो औरतें', 'पूरी हकीकत पूरा फसाना', 'नातूर'** तथा **'एक सिरे से दूसरे सिरे तक'** लिखे। **'यह बहस जारी रहेगी', 'एक दिन ऐसा होगा', 'गांधी के देश में'** इनके तीन एकांकी संग्रह हैं। **'मेंरे गीत तुम्हारे है', 'मेंरे मुक्तकः मेंरे गीत'** तथा **'मेंरी लम्बी कविताए'** इनके कविता संग्रह है। **'रेखा उर्फ नौलखियां', 'पथराई आंखों वाला यात्री'** तथा **'पारदर्शियां'** इनके तीन उपन्यास है। आत्मकथा **'सागर के इस पार से उस पार' भाग–1** प्रकाशित है तथा दूसरे भाग का लेखन जारी है। **'मासूम तथा इन्तजार'** प्रकाशाधीन कहानी संग्रह है'। दोनों लेखक अपने–अपने परिवेश में हो रहे अनुभवों को तथा समाज में आए मूल्य परिवर्तन को अपनी सशक्त लेखनी द्वारा प्रकट कर रहे हैं। दोनो कहानीकारों ने प्रवासी भारतीयों की स्थिति तथा प्रवासी भारतीयों की मूल्यों में प्रति बढ़ रही आस्था का विध्विवत वर्णन किया है। दोनों लेखकों ने समय की मांग तथा परिवर्तन के अनुसार लिखा है। **'कृष्ण बिहारी'** के अनुसार, **''मेंरा समय मुझे कल्पना की इजाज़त नहीं देता। में अपने समय को भरपूर जीता हूँ। मेंरे सुख–दुख मेंरे समय के सुख–दुख हैं। मेंरी कहानियां मेंरे समय की कहानियां हैं।''**[8]

**पारिवारिक संदर्भों में मूल्यबोध**–दोनों लेखकों ने भारतीयों के प्रवासी भारतीयों से संबधों को नि पक्षता से दर्शाया है। भारत में रहने वाले लोग अपने प्रवासी संबंधियों के विदेश में रहने पर जहां गर्व महसूस करते हैं वहीं वे उनसे ढेरों अपेक्षाएं रख लेते हैं और उन्हें **'कामधेनू'** भी मान लेते हैं। **'कृष्ण बिहारी'** की कहानी **'मोड़'** का नायक अपने भारतीय संबंधियों से इसी कारण आहत रहता है, **''चार पैसे कमाने निकला ज़िदंगी सपनों की रखैल हो गई। अनपढ़ बाप और बिगड़े तीन भाइयों की एक के बाद एक मनघंड़त योजनाएं। खेती बढ़ जाए, घर पर ट्रेक्टर हो जाए, एक जीप चलने लगे, गाँव में एक आटा चक्की चलने लगे, कस्बे के पास वाले चौराहे पर एक प्लाट हो जाए...यह सब होता रहा...वह कोल्हू का बैल हो गया।**[4] इसी तरह इनकी कहानी **'मक्कड़जाल'** तथा **'एक रिश्ते के लिए'** में भी नायक पारिवारिक मूल्यों से जूझता दिखाया गया है। सब करने के बाद भी प्रवासी संबंधियों को भारतीय यश का भागी नहीं मानते। **'तेजेन्द्र शर्मा'** की कहानी **'दीवार थीः दीवार नहीं थी'** का नायक मोहसिन चाहता है कि विदेश से आने वाली छोटी जान उनकी सब मुसीबतें हल कर दे वह सोचता है, **''काश छोटी जान अपना सियासी सुलूक यहां इस्तेमाल कर सकें। क्या इंग्लैंड के सियासतदान के रूतबे से संध्या ठाकुर प्रभावित हो सकती है।**[6] वहीं विदेश में रहने वाले प्रवासी लोगों का अगर

* प्रवक्ता, गुरुनानक कॉलेज ऑफ एजुकेशन, गोपालपुर, लुधियाना, पंजाब
** हिन्दी विभाग, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर, पंजाब

भारतीय संबंधी गरीब है तो वे उनसे प्रेम का केवल दिखावा मात्र करते हैं। आज पारिवारिक मूल्यों में भी परिवर्तन देखा जा सकता है जो परिवार में पनप रहे लोभ तथा फीकेपन को दर्शाता है, जहां धन सर्वोपरि है। **अब भी मेंरे बेटे और बहु की मृत्यु का मुआवजा मुझे ही मिले....में आपके पास क्लेम की अर्ज़ी छोड़े जा रहा हूँ।**[6] यहां लेखक ने गिरते संबंधों का कारण स्वार्थ को दर्शाया है। दोनो लेखकों ने अपनी कहानियों में परिवार के अस्तित्व तथा महत्त्व को सर्वोपरि माना है। पारिवारिक मूल्य तथा परिवार किसी भी परिवेश की अहम ज़रूरत है। **'तेजेन्द्र शर्मा'** की कहानी **'कोख का किराया'** में पारिवारिक मूल्यों को दर्शाया गया है यह मूल्य कहानी की उपनायिका 'जया' में दिखाई देते हैं। वह विदेश में जन्मी तथा पढ़ी है परन्तु उसमें भारतीय पारिवारिक संस्कार कायम हैं, **''जया मेंनी की भांति लंदन में ही जन्मी थी, किन्तु उसकी परवरिश संस्कार युक्त है। उसके माता–पिता ने बहुत नपे तुले ढंग से अपनी पुत्री के व्यक्तित्व में इंग्लैंड और भारत के संस्कारों का मिश्रण पैदा कर दिया है। जया के व्यक्तित्व में ठहराव था''**।[7] इनकी कहानी **'काला सागर'** तथा **'पासपोर्ट के रंग'** में भी स्नेह तथा मूल्य स्पष्टतः दिखाई देते हैं। **'तेजेन्द्र शर्मा'** की कहानियों में जहां जुड़ते पारिवारिक मूल्यों की बात है वहीं **'कृष्ण बिहारी'** की कई कहानियों में परिवार को तनावग्रस्त भी दिखाया गया है। इनकी कहानी **'मक्कड़जाल'** **'मुजस्समा'** तथा **'मोड़'** में ऐसे ही पारिवारिक हालात दिखाई देते हैं। **'मोड़'** कहानी का नायक सोचता है कि, **''वैसे अपना कहने लायक परिवार उसकी किस्मत में था ही कहां..पारिवारिक परजीवियों को जीवित रखने में उसकी ज़िंदगी बिगड़ गई है''**।[8] यहां नायक पारिवारिक स्नेह से दूर दिखाई देता है।

**दाम्पत्यगत संदर्भों में मूल्यबोध**–एक परिवार की आधार भूमि पति–पत्नी संबंध एवं उनके स्थापित मूल्य हैं। दाम्पत्य संबंध परिवार की नींव माने जाते हैं। **'तेजेन्द्र शर्मा'** की कहानियों में दाम्पत्य संबंधों की प्रगाड़ता देखने को मिलती है। इनकी कहानी **'देह की कीमत'** में नायिका अपने पति को विदेश नहीं भेजना चाहती। उसके मूल्य उसे अपने सामने रखना चाहते हैं। वह कहती है, **''पता नहीं जी क्यों मेंरा दिल नहीं मानता कि आप जापान जाओ..मेंरी तो बस यही तमन्ना है कि जब अपना बच्चा पैदा हो तो सबसे पहले आप ही उसका चेहरा देखें।''**[9] वहीं दूसरी ओर **'कृष्ण बिहारी'** की कहानी **'मक्कड़जाल'** में नायक की पत्नी घर की आर्थिक स्थिति सें तंग आकर पति को विदेश भेजना चाहती है। यहां नायक कहता है कि, **''बीबी जब पत्र लेकर आई तो उसकी विवशता में भी उत्साह था शायद हिन्दोस्तान में रहते हुए आर्थिक कष्ट भुगत रही थी।''**[10] यहां लेखक ने भावात्मक दाम्पत्य संबंधों का वर्णन किया है। दूसरी तरफ दाम्पत्य संबंधों में समा रहे मूल्य भंजन को भी दोनों लेखकों ने बताया हैं। **'तेजेन्द्र शर्मा'** की कहानी **'कोख का किराया'** में गैरी अपनी पत्नी मेंनी को जीवन नरक बनाने से रोकता है, परन्तु पति–पत्नी संबंध टूटने की कगार पर आ जाते हैं। यहां दाम्पत्य का स्तर गिरता दिखाया गया है। **'कृष्ण बिहारी'** की कहानी **'मुजस्समा'** में पति तथा पत्नी दोनों एक दूसरे से संतुष्ट नहीं हैं। वे तनाव में जी रहें हैं **यथा, ''लेकिन जब बीबी अपने से पैदल और अक़्ल से वैताल हो तो उसके चुप रहने का भी मतलब क्या हो सकता था। जब वह फिर चीखी, ''कहाँ गए थे?'' तो उसने बिल्कुल सामान्य पिच में कहा'', तुम्हें बताना जरूरी है क्या''?**[11] यहां दोनों लेखकों ने पति–पत्नी संबंधों की अलग–अलग मानसिकताओं का वर्णन किया है तथा इस रिश्ते में पनप रहे फीकेपन को स्पष्ट किया है।

**भारतीय परिवेश एवं रीति रिवाज़ों संबंधी मूल्य–** मूल्यों के स्पष्ट दर्शन भारतीय परिवेश तथा रीति–रिवाजों के माध्यम से दोनों लेखकों ने कराए हैं। आज भारतीय मूल्य पूरे संसार में सर्वोपरि माने जाते हैं। वे जब रीति–रिवाज़ों की लुप्त होती धारा, बदत्तर होते देश, गाँव तथा परिवार की स्थिति को देखते हैं तो दुखी हो जाते हैं। **'कृष्ण बिहारी'** की कहानी **'हकीकत में कुछ भी नहीं'** का नायक भारत के बारे में ऐसा ही सोचता है, **''गाँव पहले सा नहीं रह गया। इसके बावजूद गाँव जाता रहा हूँ। भटकने के लिए या अपने भटकाव को सही राह पर लौटाने के लिए कुछ पता नहीं चलता। गाँव जंगल हो गया है.. सूना जंगल।''**[12] इसी तरह **'तेजेन्द्र शर्मा'** की कहानी **'दीवार थी : दीवार नहीं थी'** में प्रवास से आने वाली छोटी जान भी अपने देश, गाँव की बदत्तर होती हालत पर आंसू बहाती है। **'तेजेन्द्र शर्मा'** की कहानी **'पासपोर्ट के रंग'** में भी इंग्लैंड में रहने वाला भारतीय स्वतंत्रता सेनानी भारत में ही मरना चाहता है, वह कहता है, **''बेटा तू मुझे वापस भारत भेज दे। में किसी तरह अपनी ज़िदंगी बिता लूंगा वहाँ।......मैं हिन्दोस्तान में पैदा हुआ था और हिन्दोस्तानी ही मरना चाहता हूँ।''**[13] अपना देश तथा अपनी संस्कृति हर किसी को प्यारी होती है यह बात **'कृष्ण बिहारी'** की कहानी **'ब–बॉय'** से सिद्ध होती है कहानी की नायिका सिमर कहती है कि, **''जब फिलीस्तीन बन जाएगा तो वह वापस अपने देश में जाएगी, वहीं रहना पसंद करेगी, अब फिलीस्तीन को मान्यता मिलने में कुछ देर नहीं है।''**[14] यहां यह बात स्पष्ट है।

**वैज्ञानिक उपलब्धियों का जीवन मूल्य पर प्रभाव–** दोनों लेखकों की कहानियों में आज की वैज्ञानिक उपलब्धियों के जीवन मूल्यों पर होने वाले प्रभाव का वर्णन किया गया है। **'तेजेन्द्र शर्मा'** की कहानी **'कोख का किराया'** में आर्टीफीशल इनसेमीनेश्न की बात की गई है, उससे वह व्यक्ति जो संतान सुख से वंचित रहते हैं उनको यह सुख प्राप्त हो सकता है। **'कैंसर'** कहानी में कैंसर जैसी लाइलाज बीमारी के वैज्ञानिक हल को बताया गया है। डा0 नायक को समझाते हुए कहता है कि, **''यू कैन पुट इज दिस वे, कि कीमोथिरेपी की एक माइल्ड फार्म है टेमोक्सीफिन, एक हार्मोनल दवाई है, यह दवा शरीर में जाकर फीमेंल हार्मोन होने का दिखावा करती है। कैंसर सैल इसकी तरफ अट्रेक्ट होते हैं और कांटेक्ट में आकर मर जाते हैं। इस तरह वह कैंसर को आगे बढ़ने से रोकती है।''**[15] इन्हीं की कहानी **'देह की कीमत'** में नायिका के पति की मृत्यु के बाद उसके पिता समान ससुर उसका दूसरा विवाह करने की सोचता है यह भी परिवर्तन भारतीय संदर्भों में एक मिसाल है। **'कृष्ण बिहारी'** की कहानी

**'ब–बॉय'** तथा **'पूरी हकीकत पूरा फसाना'** में भी समाज में हो रहे परिवर्तनों के पड़ रहे प्रभाव को समझाया गया है।

**युग यथार्थ और मूल्य बोध**–दोनों लेखकों का व्यक्तित्व जीवन–यथार्थ की मूल्यहीनता को समझता है। **'तेजेन्द्र शर्मा'** की कहानी **'चरमराहट'** में लुप्त होते भाईचारे, सद्भाव तथा चरमरा गई सामाजिक व्यवस्था का यथार्थ चित्रण है। कहानी में जब नायक को विदेश से डिपोर्ट कर दिया जाता है तो वह अपने देश की बदत्तर होती हालत देखकर सोचता है कि सारा का सारा ढांचा ही चरमरा गया है, **''सारे माहौल को देखकर हिन्दुस्तानी को महसूस हुआ कि ढांचा ही नहीं चरमराया बल्कि बहुत कुछ चरमरा गया है लोगों का विश्वास, भाईचारा, समाज की नींव''[16] 'काला सागर'** तथा **'देह की कीमत'** में भी समाप्त होते मूल्यों का यथार्थ चित्रण किया गया है। **'कृष्ण बिहारी'** की कहानी **'पूरी हकीकत पूरा फसाना'** में भारत में बढ़ रहे भ्रष्टाचार, अनाचार आदि का यथार्थ चित्रण किया गया है। नायक ने एक नाटक के माध्यम से यह हकीकत बताई गई है, **''लेकिन मंत्री जी यह तो झूठ है.. गाँवों में बिजली के खम्भे ही लगे हैं..सरकारी स्कूलों में मास्टर नहीं... मास्टर है तो स्कूल की इमारत नहीं.. सरकारी अस्पतालों से ज़िदा लौटना केवल अमृत पीकर पैदा हुए लोगों के लिए संभव है। टैलिफोन तो अपना ही डेड हो जाता है।''[17]** इस यथार्थ को दिखाकर लेखक ने अपनी व्यवस्था की मूल्यहीनता पर करारी चोट की है।

**मूल्यहीनता और त्रासद जीवन**–आज समाज में जो नवीन परिवर्तन देखने को मिलते है उनमें बढ़ रही मूल्यहीनता के कारण त्रास का पनपना प्रमुख है। **'तेजेन्द्र शर्मा'** की कहानी **'कोख का किराया'** की नायिका मेंनी ऐसी ही पात्र है जिसने स्वयं अपने हाथों से अपना जीवन मूल्यहीन बना दिया वह सोचती है, **''हैल, नर्क इसकी को कहते हैं? पति–बच्चे छोड़ जाएं।...इन्सान अंधेरे बंद कमरे में अपने अस्तित्व से डरता रहे। यही तो नर्क की वह आग है जिसकी तपिश महसूस की जा सकती है।.. आज हर आँख में यही प्रश्न दिखाई देता है कि तुम क्या कर बैठी?''[18]** कहने का तात्पर्य यह है कि वह वासना में अंधी होकर अपने आप को नरक में धकेल देती है। **'काला सागर'** कहानी में इन्होने कुछ अनजान स्वार्थी तत्वों द्वारा पैदा की गई त्रासद स्थिति का वर्णन किया है, **'कृष्ण बिहारी'** की कहानी **''अपने–अपने कुरूक्षेत्र''** में युद्व के कारण पैदा हुई त्रासद स्थिति का वर्णन है, **''कुबैत से ओंकाशर तक बाम्बिंग जारी है। बगदाद पर तो कहर ही टूट रहा है। ..नासीरिया, नज़फ और कर्बला पर मिसाइलें गिरी है... उसके साथ सभी भुगत रहे हैं एक महीना पहले ही मां–बाप को भी विज़िट पर बुला लिया, बूढ़े लोगों की मौत उन्हें खींच ले गई।''[19]**

**जिजीविषा और मूल्य बोध**–जिजीविषा अर्थात जीने की इच्छा तथा जीने के लिए मानव संघर्ष करता रहा है। यही बात दोनों लेखकों ने विदेश में संघर्ष कर रहे लोगों में दिखाई हैं।

**धर्म और मूल्यबोध**–एक समय था जब धर्म तथा मूल्यों को एक स्थान प्राप्त था। आज मूल्यों में जहां परिवर्तन हुआ है वहां धर्म मुख्य कारण है। धर्म आज के स्वार्थी समाज का मुख्य मुद्दा बन गया है। स्वार्थी लोग धर्म के माध्यम से धर्म की दीवारें खड़ी करके मूल्यों का हनन करते हुए अपना स्वार्थ सिद्ध कर रहे हैं।

**नारी और मूल्यबोध**– हमारे भारत में नारी को लक्ष्मी का दर्जा दिया जाता है इसी दर्जे को बरकरार रखते हुए दोनों लेखकों ने नारी के मां, पत्नी, बहन तथा प्रेमिका के रूप को दिखाते हुए उसके उस रुप का वर्णन भी अपनी कहानियों के माध्यम से किया है जो मूल्यहीन होकर अपने रास्ते से भटक चुकी है। **धीरेन्द्र अस्थाना के अनुसार, ''परकाया प्रवेश में तेजेन्द्र को दक्षता हासिल है। यानि स्त्रियों की यातना, दुःख और हर्ष को तेजेन्द्र में ठीक उसी तरह से जिया है जैसे कोई स्त्री ही जी सकती है''[25]।**

**स्मानताएं तथा असमानताएं**–**'तेजेन्द्र शर्मा'** तथा **'कृष्ण बिहारी'** के व्यक्तित्व तथा लेखन में कई समानताएं है। **'तेजेन्द्र शर्मा'** ने औरत के जहां दो पहलुओं का वर्णन किया है वहीं **'कृष्ण बिहारी'** ने इन दो रूपों के अतिरिक्त मात्र भोग–विलास का साधान बन गई पीड़ा ग्रस्त महिला का चित्रण भी किया है। दोनों लेखकों की रचना का परिवेश भी भिन्न–भिन्न है। निष्कर्षतः यह कह सकते हैं कि चाहे दोनों लेखकों में बहुत सी समानताएं या असमानताएं हैं तब भी दोनों ने अपने–अपने लेखन के माध्यम से आज भारतीय साहित्य तथा संस्कृति की जो पहचान बनाई है, हिन्दी कहानी को स्पष्टवादिता तथा नया रूप प्रदान किया है वह आज सर्वमान्य है। दोनों लेखक हिन्दी साहित्य के अनमोल रत्न हैं।

**सन्दर्भ–**

1. तेजेन्द्र शर्मा, मेंरी लेखन प्रक्रिया, बेघर आंखे (दिल्लीः अरू पब्लिकेशन, 2007), पृ0.7 2. में लिखता क्यों हूं, तेजेन्द्र शर्मा, www.vatayan.net, 2008 (अन्तरजाल से ली गई सामग्री का आधार) 3. कृष्ण बिहारी, वक्तव्य, पूरी हकीकत पूरा फसाना (दिल्लीः आत्माराम एण्ड सन्ज, 2003) पृ 09. 4. कृष्ण बिहारी, नातूर (दिल्लीः सावित्री प्रकाशन, 2003), पृ 0109. 5. तेजेन्द्र शर्मा, दीवार थीः दीवार नहीं थी, हंस (पत्रिका) राजेन्द्र यादव (संपा0) (दिल्लीः अक्षर प्रकाशन, 2008) पृ.21 6. तेजेन्द्र शर्मा की दस कहानियां, तेजेन्द्र शर्मा www.abhivyakti.org, पृ023 (अन्तरजाल से ली गई सामग्री का आधार) 7. तेजेन्द्र शर्मा, बेघर आंखें (दिल्लीः अरू पब्लिकेशन, 2007) पृ039 8. कृष्ण बिहारी, नातूर (दिल्लीः सावित्री प्रकाशन, 2003), पृ 0168 9. तेजेन्द्र शर्मा, देह की कीमत (दिल्लीः वाणी प्रकाशन, 2001), पृ011 10. कृष्ण बिहारी, दो औरतें (दिल्लीः आत्मराम एण्ड सन्ज, प्रथम संस्करण), पृ 0165. 11. कृष्ण बिहारी, एक सिरे से दूसरे सिरे तक (दिल्लीः आत्माराम एण्ड सन्ज, 2005), पृ 0191. 12. वही, पृ 0152 13. तेजेन्द्र शर्मा, बेघर आखें (दिल्लीः अरू पब्लिकेशन, 2007), पृ0138 14. कृष्ण बिहारी, दौ औरतें (दिल्लीः आत्माराम एण्ड सन्ज, प्रथम संस्करण), पृ 0215. 15. तेजेन्द्र शर्मा, देह की कीमत (दिल्लीः वाणी प्रकाशन, 2001), पृ040 16. वही, पृ 0127 17. कृष्ण बिहारी, पूरी हकीकत पूरा फसाना (दिल्लीः आत्माराम एण्ड सन्ज, 2003), पृ 0127 18. तेजेन्द्र शर्मा, बेघर आंखें (दिल्लीः अरू पब्लिकेशन, 2007), पृ016 19. कृष्ण बिहारी, एक सिरे से दूसरे सिरे तक (दिल्लीः आत्माराम एण्ड सन्ज, 2005), पृ 0100 20. आलोचकों की निगाह में तेजेन्द्र शर्मा, धीरेन्द्र अस्थाना, www.sahityakunj.net,2008. (अन्तरजाल से ली गई सामग्री का आधार)